Dr.Ranjeet Kumar

History department

H.D Jain college ara,

Notes:-B.A part 3,Paper 5

Topic:दिल्ली सल्तनत के अधीन सूफीवाद

सूफीवाद से आप क्या समझते है?इसकी अवधारणा स्पष्ट करें।

सूफीवाद इस्लाम के भीतर एक उदारवादी सुधार आंदोलन था, जिसकी उत्पत्ति फारस में हुई थी। सूफीवाद भारत में 10-11वीं शताब्दी में आया और 12वीं शताब्दी में लोकप्रिय हुआ। 12वीं शताब्दी तक सूफियों को 12 सिलसिलों में संगठित किया गया था। सिलसिला आमतौर पर एक प्रमुख फकीर के नेतृत्व में होता था जो अपने शिष्यों के साथ खानकाह या धर्मशाला में रहता था।

- चार सबसे लोकप्रिय सिलसिले थे:
  - चिश्ती,
  - सुहरावर्दी,
  - कादरी-रियास और
  - नक्शबंदी।

सूफीवाद की मुख्य विशेषताएँ:

- **मौलिक सिद्धांत:** ईश्वर एवं मनुष्य के बीच प्रेम का संबंध सूफीवाद का आधार है।
- **केंद्रीय विचार:** आत्मा का विचार, दैवीय निकटता, दिव्य प्रेम और आत्म-विनाश सूफीवाद के सिद्धांत के केंद्र में हैं।

- **मानव प्रेम:** सूफीवाद के अनुसार, ईश्वर से प्रेम का अर्थ मानवता से प्रेम है और इस प्रकार उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ईश्वर की सेवा मानवता की सेवा के अलावा और कुछ नहीं है।
- **समानता में विश्वास:** सूफीवाद सभी धार्मिक और सांप्रदायिक भेदों से परे है तथा सभी मनुष्यों को समान मानता है।
- **आत्म अनुशासन:** सूफीवाद आत्म अनुशासन पर भी ज़ोर देता है और इसे ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आवश्यक मानता है।
- **आंतरिक पवित्रता:** यह रूढ़िवादी मुस्लिम संप्रदायों (जो कि बाहरी आचरण पर ज़ोर देते हैं) के विपरीत सूफीवाद आंतरिक शुद्धता पर ज़ोर देता है।

भारत में धार्मिक एकता को बढ़ावा देने में सूफियों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इन्होंने भारत में प्रचलित हिंदू परम्पराओं को इस्लाम में स्वीकृति दिलायी। धार्मिक उदारता के क्षेत्र में सूफियों का योगदान महत्त्वपूर्ण था। सूफी शासक वर्ग के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाए। अधिकतर सूफी शासक वर्ग से सम्बन्ध नहीं रखते थे, इसके विपरीत वे पीड़ित एवं शोषित वर्ग का समर्थन देने में विश्वास रखते थे। ऐसा करने में उन्होंने हिंदू मुस्लिम के भेदभाव को कभी नहीं माना। इस तरह उन्होंने एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया जिसमें सभी मनुष्य एक समान थे तथा सभी के प्रति उनका व्यवहार एक जैसा था। सूफी संतों ने सामाजिक तथा पारस्परिक वैमनस्य को दूर करते हुए आपसी एकता पर जोर दिया। सम्पूर्ण भारत में सूफी खानकाहें हर वर्ग के लोगों के लिए खुली थी। मुस्लिम समाज के प्रति भी सूफियों की उल्लेखनीय देन यह है कि भारत में इस्लाम का प्रचार वस्तुतः इन्होंने ही किया। इन्होंने यह सिद्ध किया कि इस्लाम धर्म हिंसा और कट्टरता पर आधारित नहीं है। धार्मिक सहिष्णुता और सद्भाव, नैतिक मूल्यों की संपुष्टि और सामाजिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन देकर उन्होंने भारतीय इतिहास में एक नये और सकारात्मक युग का शुभारंभ किया